



अंक 11, नवंबर 2014, कुल पृष्ठ 12

मेहनत करो खामोशी से कि सफलता शोर मचा दे : विष्णु गोयल

मूल्य मात्र 10 रु



Catch us on air!

सेहर

92.7 BIG FM
SUNG SUNAO, LIFE BANAO!

रेडियो चैनल पर कल्कि जी के भजन हर बुधवार और शनिवार को
प्रातः 5 से 7 बजे गायक अनूप जलोटा के साथ



रोहिणी दिल्ली के पंचतारा होटल
क्राउन प्लाजा में श्री कल्कि बाल
वाटिका द्वारा भगवान श्री कल्कि के
साहित्य स्टॉल का दो दिवसीय
आयोजन व दशावतार प्रस्तुति



Watch the youtube video:



goo.gl/cZzbk5

OR SCAN ME!

इस अंक में

- ▶ जब परेशानी में कोई रास्ता न सूझे तो..... 7
- ▶ ऊँ के 11 शारीरिक लाभ—अंकुर गोयल
मांसाहारी को भी भक्ति सिखा दी—नीतू गुप्त 2
- ▶ माँ धूमावती का अनुभव में दिखना 3
- ▶ जब मन में संशय रखकर कार्य किया तो
कल्कि जवाब दिया 4
- ▶ जब दुख घेर ले तो 4
- ▶ जब नाली की ईंट चौबारे में लग जाए 7

एल्यूमिनियम फॉयल पर छपा कल्कि भगवान का वर्ष
2015 का कलेंडर अब आपके लिए उपलब्ध व्यापारी
अपने ग्राहकों को एवं दोस्तों को भेंट कर पुण्य लाभ प्राप्त
करें। मूल्य मात्र 15 रुपए प्राप्ति स्थान : दिल्ली में चांदनी
चौक कोलकाता में : सॉल्ट लेक प्रतिभा अग्रवाल



अग्रोहा धाम हरियाणा में
कल्कि म्यूजियम बनना
शुरू इसमें हमें चाहिए
आपकी अच्छी सोच एवं
आपका विश्वास



आगामी अंकों में

- ▶ 16 मई 2013 को कल्कि जी दशाश्वमेध घाट वाराणसी में
विराजे 8 मार्च 2014 को कांशी विश्वनाथ में

- ▶ 17 मई 2014 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी
और अब 1 नवंबर 2014 को अपार दौलत के
स्वामी मुकेश अंबानी ने दशाश्वमेध घाट एवं
कांशी विश्वनाथ के दर्शन किए

- ▶ जब श्री कल्कि ने सैलरी में से शुभ का 1% नहीं 5 % शेयर मांगा
— सुश्री अलका गोयल

- ▶ लेने वाला चाहिए घर, व्यापार, जीवन दान कल्कि जी सब देते हैं
— सुश्री रश्मि गनेरीवाल

- ▶ अपने पर जुर्माना : एक मजबूत हथियार



9 नवंबर 2014 को यमुना
जी के यज्ञ की टी.वी.
चैनल कवरेज

www.youtube.com/merekalki



Watch popular Kalki videos and listen
Kalki Bhajans on our youtube channel
and join the other 10,457 viewers.

—Vishnu Goel (7503215553)



Kalki Group (Real) has been transformed.
Have a look @ www.facebook.com/shreekalki

ॐ के 11 शारीरिक लाभ

—संकलनकर्ता : अंकुर गोयल (9999079020)

ॐ सम्पूर्ण ब्रह्मांड की उत्पत्ति का द्योतक है। ॐ का उच्चारण शारीरिक लाभ प्रदान करता है। आइए जानें कैसे ॐ है स्वास्थ्यवर्धक—

1. ॐ दूर करे तनाव : अनेक बार ॐ का उच्चारण करने से शरीर तनाव रहित हो जाता है।
2. ॐ और घबराहट : घबराहट या अधीरता में ॐ का उच्चारण अति उत्तम है।
3. ॐ और विषैले तत्व : तनाव के कारण शरीर में उत्पन्न होने वाले विषैले तत्वों का नाश करता है।
4. ॐ और खून का प्रवाह : यह हृदय और खून के प्रवाह को संतुलित रखता है।
5. ॐ और पाचन : ॐ के उच्चारण से पाचन शक्ति तेज होती है।
6. ॐ लाए स्फूर्ति : इससे शरीर में युवावस्था वाली स्फूर्ति का संचार होता है।
7. ॐ और थकान : थकान दूर होकर तरोताजा महसूस होता है।
8. ॐ और नींद : नींद न आने की समस्या कुछ ही समय में दूर हो जाती है।
9. ॐ और फेफड़े : ॐ के उच्चारण से फेफड़े मजबूत होते हैं।
10. ॐ और रीढ़ की हड्डी : ॐ के उच्चारण से जो कंपन पैदा होता है जिसके कारण रीढ़ की हड्डी प्रभावित होती है और उसकी क्षमता बढ़ती है।
11. ॐ और थायरॉइड : ॐ के दूसरे अक्षर के उच्चारण से गले में कंपन पैदा होती है जो कि थायरॉइड की ग्रंथि पर प्रभाव डालती है।



मांसाहारियों को भक्ति सिखा दी

—नीतू गुप्त (8588006152)

तीन वर्ष पहले हमने अपनी सोसायटी में गणेश उत्सव की शुरुआत की थी। रेजिडेंट वेलफेयर असोसिएशन के लोगों ने कहा कि अभी हमारी एसोसिएशन में इतना रुपया नहीं कि हम गणेश उत्सव मना सकें। हमारे परिवार ने भावुकता में आकर कह दिया कि ठीक है हमारे घर का आंगन बड़ा है सोसायटी में एक अच्छी पहल करने से आपस में प्रेम बढ़ेगा हम यहाँ पर गणेश उत्सव मना लेते हैं। पहले साल पूरे 10 दिन उत्सव हुआ। उसमें सभी ने पूरा सहयोग किया। खर्च का कोई भी बोझ किसी पर नहीं पड़ा क्योंकि सभी ने मिल जुल कर यह समारोह आयोजित किया था। दूसरे वर्ष यह आयोजन तीन दिन के लिए किया गया क्योंकि बच्चों के परीक्षा के दिन होते हैं। इस वर्ष कुछ परिवार ऐसे आकर जुड़े जिन्होंने नए तरीके की राजनीति शुरू कर दी। जिसका परिणाम यह हुआ कि (गणेश उत्सव जिस स्थान पर शुरू किया जाता है वहाँ तीन वर्ष तक करना अनिवार्य होता है, ऐसा राजनीति करने वाले परिवारों का कहना था) बहुत गलत कारण दे-देकर मात्र कुछ परिवारों ने मिलकर एक बड़े स्तर के गणेश उत्सव का आयोजन किया जिसमें 75 हजार के लगभग खर्चा आया जो सोसायटी के लोगों के विरोध के बावजूद चंदा मांग मांग कर इकट्ठा किया गया। ऐसे गृह युद्ध से मन बहुत दुखी हुआ लेकिन मैंने अपने आंगन में तीन दिन का उत्सव सादगी से हर वर्ष की तरह आयोजित किया। दूसरे दिन शाम को मैंने गणेश जी के समक्ष खड़े होकर पूछा कि इन लोगों ने ऐसा क्यों किया? इतना मनमुटाव इस धार्मिक उत्सव में क्यों? इस पर मुझे जागृत वाणी अनुभव हुआ : **म्लेच्छों (मांसाहारियों) को भक्ति सिखा दी और क्या चाहिए?** यह उत्तर सुनते ही मेरे मन में ठहराव आया कि सच है जो लोग कभी सोसायटी के फंक्शन में मांसाहारी खाने के लिए बहस किया करते थे आज गणेश जी के उत्सव की तैयारियों में सहपरिवार लगे हुए हैं। यह सोच कर मन मुस्कुरा उठा।

इतनी शक्ति हमें देना दाता
मन का विश्वास कमजोर हो ना

खेल खेल में संस्कार रोपण कार्यशाला

दिनांक : 28 दिसंबर 2014, रविवार

श्री कल्कि सहस्रनाम हवन : प्रातः 10 बजे

महामंत्र मुकाबला एवं कार्यशाला 11 बजे से 2 बजे तक

रमणी अग्रवाल स्वप्नानुभव में दिखाए अनुसार संचालिकाओं एवं बालक बालिकाओं को चाणक्य की भाषा में चलना ही जीवन

यह कैसे कार्यान्वित करें बताएंगी-दिखाएंगी और सिखाएंगी

* भगवान से शक्तियों का मांगना उनका आभार प्रगट करना कि आप हमें स्वप्नानुभव द्वारा सहारा दे रहे हैं देते रहें अपनी कृपा बना रहे हैं बनाते रहें।

स्थान : 1903, पहली मंजिल चांदनी चौक, दिल्ली-6

संपर्क : रमणी अग्रवाल-9212216251, शलभ गोयल-9810066506



रमणी अग्रवाल



कल्कि के मानने वालों के लिए माँ धूमावती के अनुभव में दिखने पर नाश से निकलने के रास्ते

— श्री राजन चौधरी - सविता चौधरी



श्री राजन-सविता चौधरी

मैं एक बस में जा रहा हूँ। मुझे ऐसा लगता है वह बस आकाश मार्ग से जा रही है। मैं बस की खिड़की से नीचे देखता हूँ तो मुझे नीचे देखने में बहुत डर लग रहा है। बस ऊपर से नीचे विमान की तरह उतरने लगती है। बस नीचे सरोवर पर उतर जाती है। मैं बस से बाहर उतरता हूँ और फिर चारो तरफ नज़र घुमाता हूँ तो देखता हूँ ऊँचाई में पीछे की तरफ जाती हुई अनगिनत सीढ़ियाँ नज़र आती हैं। तभी देखता हूँ उन सीढ़ियों से उतरता हुआ श्याम सुन्दर सिंह नाम का दरबान (जो हमारे बिजनेस में था, जिसको मरे हुए डेढ़ साल हो गया है) नीचे उतरते हुए मेरी तरफ ताल ठोकते हुए आ रहा है। मैं भी उसे देखते हुए ताल ठोकता हूँ। अब तक तो मुझे भय नहीं लग रहा था पर धीरे-धीरे उसके साथ बहुत आदमी इकट्ठे होने लगे और जब तक नीचे आया तो मुझे भय लगने लगा क्योंकि उसके साथ 7-8 आदमी थे। अब मैं उसका मुकाबला कैसे करूँगा। तभी मैं माँ भगवती को पुकारता हूँ और कहता हूँ, माँ आप आइये और मुझे ऐसा लग रहा था मेरे पुकारने से माँ आ जायेंगी। मैं फिर से कहता हूँ माँ देर क्यों कर रही है मुझ पर संकट आया हुआ है। पर माँ नहीं आती हैं।

अब श्याम सुन्दर और उसके आदमी मेरी शादी अपनी लड़की से जबरदस्ती करवा देते हैं। उस लड़की के पाँच साल की लड़की भी है। श्याम सुन्दर की लड़की देखने में एकदम कुलटा, म्लेच्छ जैसी है। शादी के पश्चात् मुझे कोई शर्मिन्दगी महसूस नहीं हो रही है। मैं अपने आपको केवल विवश महसूस करता हूँ। मेरी बीवी मेरे साथ सहज भाव से खड़ी है। अब मैं उसकी बेटी के साथ उसके गाँव जा रहा हूँ। जैसे ही हम लोग शादी वाली जगह से निकल कर बाँयें ओर मुड़ते हैं तो देखता हूँ कि पत्थर की बड़ी सी दिवाल है उसमें दो आले हैं। उसमें से एक आले पर एक वृद्ध विधवा महिला सफेद रंग की स्वच्छ साड़ी पहने हुए बैठी हुई है। मैं उसे देखकर उसके घुटने पर सर रखकर रोते हुए बंगाली में कहता हूँ कि माँ तुम नहीं आई। मैंने तुम्हें कितना पुकारा, तुम्हारे भरोसे में किसी से भी भय नहीं करता था, और मैं रोते जा रहा हूँ और वो मेरे माथे पर हाथ फेर रही है।

मैंने ये अनुभव अपनी बहिन इन्दु को सुनाया उसने 2-3 दिन का समय माँगा। तीन दिन बाद उसने पूछा आपका घर-व्यापार कैसा चल रहा है, कोई परेशानी है क्या? तो मैंने कहा सब ठीक चल रहा है। उसने मुझसे कहा कि यह अनुभव धूमावती माता की विनाश लीला को दर्शाने वाला है, जो अपने पति को ही खा गई थीं अर्थात् आपके व्यापार पर बहुत बड़ा संकट आने वाला है। इसमें ऐसी विषम परिस्थितियाँ भी हो सकती हैं जिसमें फँसकर कोई भी हालत मुझे समझौता करने के लिये मजबूर कर सकती है। फिर मुझे जो उपचार बताए गए वे निम्न हैं—

उपचार- बगलामुखी माँ का 20 रुपये के हिसाब से 7 दिन तक का चक्र चलता है माँ मैं असहाय हूँ, मुझे तांत्रिक शक्तियों के चंगुल से बचाओ। मुझे पूर्ण रूपेण स्वस्थ शरीर से रहते हुए कल्कि भगवान का काम करना है। गणेश जी-20 रुपए से, हनुमान जी का 129 रुपये योगी-योगिनी के निमित्त 80 रुपये के लड्डू, 10 रुपए दक्षिणा एवं 25 रुपए के सिक्के मंदिर के बाहर गरीबों में प्रसाद सहित बांटने के लिए।

प्रार्थना : हे हनुमान जी महाराज, हे गणेश जी महाराज आपकी योग-योगिनी जबरदस्ती मेरी शादी करवा कर मेरी शादीशुदा जिन्दगी को तबाह और बर्बाद कर देना चाहते रही हैं। मेरी रक्षा करें मुझे अपनी पत्नी के साथ सुख पूर्वक रहते हुए कल्कि भगवान का कार्य करना है।

3. श्याम सुन्दर का सीधा, वस्त्र, पानी की बोतल 5 रुपये के संकल्प से—हे देवी स्वधा ये असन्तुष्ट, अतृप्त, शैतानी शक्तियाँ श्याम सुन्दर जो मुझे तबाह और बर्बाद करने के लिये नयी शक्तियाँ संगठित करके मुझे बर्बाद कर देना चाह रहा है अपना गुलाम बना लेना चाह रहा है उनका भाग उनको देकर उनके लोकों में उन्हें भेजिए। ताकि मेरी जिन्दगी में आकर मुझे मुश्किलों में न डाले। मुझे मेरी बीवी, बच्चों के साथ सुख पूर्वक रहते हुये कल्कि भगवान का कार्य करना है।

4. भैरों बाबा-20 रुपये और चार रोट प्रति बुधवार करते रहें।

प्रार्थना : कलयुग की बाहरी अन्तरजगत की दुराचारी, अशरीरी, अतृप्त, शैतानी शक्तियाँ मुझे तबाह और बर्बाद कर देना चाह रही हैं। बर्बाद करने के लिये नित्य नये षड्यन्त्र कर रही हैं। उनका मुख, मस्तिष्क बन्द करके हमें छुटकारा दिलवायें, हमारे बिगड़े काम सही करवायें। मुझे कल्कि भगवान का कार्य करना है। ये सारे उपचार मेरी पत्नी ने कर दिये। लेकिन मैंने इस अनुभव को इतनी गंभीरता से नहीं लिया। 17-18 मार्च 2010 में एकदम से मेरे व्यापार में बहुत बड़ा संकट आया। मुझे बहुत ज्यादा सामर्थ्यवान मेरे दो प्रतिद्वन्दी मेरे व्यापार को बर्बाद करने के लिये एक साथ मिल

गये। वे दोनों मुझसे आर्थिक एवं समाजिक दृष्टि से काफी मजबूत थे। मुझे मजबूर और लाचार करके वह अपने कदमों में झुकाना चाहते थे। यदि मैं ऐसा न करता तो वह मेरे व्यापार को पूर्णतः बन्द करवा देते। मैं बहुत ही स्वाभिमानी प्रवृत्ति का व्यक्ति हूँ और मुझे किसी भी कीमत पर अपने स्वाभिमान पर समझौता करना पड़े तो यह मेरे लिये बहुत ज्यादा दुष्कर था। ऐसी परिस्थितियों में मैं अपने आपको बेबस और मजबूर महसूस कर रहा था। लेकिन इस समस्या से निकलने का कोई दूसरा मार्ग नहीं दिख रहा था। रात को मुझे नींद नहीं आ रही थी। और परेशान सा था तो मुझे वाणी अनुभव हुआ कि तू उनकी चिंता मत कर वह तेरे हाथों बुरी तरह परास्त होंगे। इन्दु से पूछकर काली माँ का उपचार करो। उन्होंने कहा कि काली माँ का धूना और काली माँ का 26 हलुआ पूरी करो। काली माँ का मैंने 11 दिन तक का 11 जगह धूने का समान निकाला (11 लौंग जोड़ा, 2 इलायची, 1 कपूर, 2 सुपारी, 1 जायफल, पंच मेवा)

प्रार्थना:- हे काली माँ मैं ये 11 जगह एक दिन के हिसाब से 11 दिन तक रोज का संकल्प ले रहा हूँ सो स्वीकार करें और फिर ऊपर लिखी दुर्गा माँ की प्रार्थना के साथ मैं संकल्प लिया।

2. 26 पूरी (10-10-6) हलवा और 3 रुपये काली माँ के निमित्त जब तक समस्या हल न हो जाए, संकल्प करके पूरा करना।

3. बगलामुखी माँ की मन्त्र की 1 माला का हवन।

ये सारे उपचार करने के बाद 2 दिन बाद यानी 26 मार्च 2010 को ये अनुभव आया। एक बहुत बड़ी जगह है। वहाँ पर एक बड़ा स्टेज है। कोई समारोह होने वाला है। मैं और मेरी पत्नी साथ में गये हैं। ऐसा लग रहा है जैसे कोई विजय प्राप्त कर आये हैं। स्टेज पर कई लोग बैठे हुए हैं। इन्दु भी बैठी हुई है। पहले मुझे पता नहीं था कि स्टेज पर मेडल मुझे भी मिलेगा। देखता हूँ कि स्टेज पर मैं खड़ा हूँ। वहाँ मुझे मेडल दिया जा रहा है। जब अनुभव इन्दु को सुनाया तो इन्दु ने कहा भगवान कल्कि जी अब आपको विजय दिलवाएंगे। बस अब आप भगवान श्री कल्कि का धन्यवाद का 21 रुपये कल्कि भगवान के निमित्त निकालें ओर प्रार्थना करें— भगवान आपको कोटी-कोटी धन्यवाद और जो आप मुझे विनाश से बचाकर वैभवता दिलवाई हैं वह पूरी तरह बनाए रखें आगे गलती हो तो अनुभव देकर कलियुग के चंगुल से बचाते रहें। भगवान श्री कल्कि ने मेरे ऊपर बहुत बड़ी कृपा की बल्कि मेरे व्यापार के सारे लोग मेरे शत्रु के खिलाफ हो गए। उसकी आलोचना करने लगे अपने पूरे समाज को अपने खिलाफ देखकर मेरा शत्रु घबराया। उसने मुझसे संधि करने के लिये मेरे पास मेरे ट्रेड के अन्य लोगों ने प्रयत्न किया। मेरा उसका मेरी शर्तों पर समझौता हो गया। मेरे अराध्य युग के अवतार भगवान श्री कल्कि ने मेरी अनुभूतियों के साक्षात् प्रकट होकर इस प्रकार मेरे आत्म सम्मान और मेरे स्वाभिमान की रक्षा की। आज के दिन वह व्यक्ति मेरे अच्छे मित्रों में से है। शरीर के कण-कण से मैं कल्कि भगवान का आभारी हूँ।

ध्यान योग्य : हर मनुष्य किसी का कुछ करने के बाद चाहता है। भगवान श्री कल्कि ने आपका किया है सो आप भी उनकी चाहत (प्रचार कार्य) पूरी करेंगे तो अच्छा रहेगा।

जब मन में संशय रखकर कार्य किया तो कल्कि जी ने जवाब दिया

—सुश्री सरिता गुप्ता (9990485395)



मैंने सितंबर की मासिक पत्रिका में पढ़ा कि दो कुंडीय यज्ञ में दही की कटोरी में चीनी, हल्दी डालकर माँ बगलामुखी का हवन करने के पश्चात् बाहर चक्कर लगा कर आना है फिर कल्कि जी का हवन करना है। यह मैंने कर तो दिया लेकिन दही खाते हुए और परिवार वालों को देते हुए मन में बड़ा संशय हो रहा था। सो मैंने वह दही की कटोरी पूजा में रख दी और सोचा कि कल्कि पैल के सदस्य से बात करके पहले अपने संशय का निवारण करूंगी।

दोपहर के समय मेरी कल्कि पैल की सदस्या से बात हुई मैंने अपने मन का संशय उन्हें बताया इस पर वह बोलीं कि यह उपचार कोलकाता के एक कल्कि भक्त को स्वप्नानुभव में आया था सो हमने वैसे का वैसा इसे छाप दिया। हम तो चल ही कल्कि जी की स्वप्नानुभव लीला के अनुसार रहे हैं

जो अनुभव मैं कल्कि जी ने कह दिया उसमें संशय कैसा ? यह सुनकर मुझे तसल्ली हुई और मैंने शाम को वह दही प्रसाद के रूप में खा ली। 16 सितंबर 2014 की रात्रि मुझे स्वप्नानुभव आया—मैं किसी बड़ी मुसीबत से बची हूँ और आकर अपने घर के पलंग पर लेटी हूँ। मेरी छाती पर कुछ भारी सुरक्षा कवच रखा है, उससे मुझे सुरक्षित महसूस हो रहा है। तभी कल्कि बाल वाटिका पैल की वही सदस्या दिखती हैं जिनसे फोन पर मेरी बात हुई थी वह हंसते हुए कह रही हैं देखा आपने कितने बड़े संकट से बच गईं माँ बगलामुखी के यज्ञ के प्रसाद की दही खाने से अब माँ का धन्यवाद कर देना। मैंने उसी दिन ही माँ बगलामुखी का धन्यवाद किया और प्रतिदिन के हवन में प्रसाद लगाना एवं लेना शुरू कर दिया।



जब दुख घेर ले

आलस्य-अहंकार-क्रोध-अति आत्मविश्वास छोड़िए। जब आप दुखी हों तो सोचना कहीं आप आलस्य तो नहीं कर रहे हैं।

हमें चाहिए आपका 2-इन-1 सहयोग अर्थात् आपकी ऊँची सोच और विश्वास कि अगले वर्ष (2015) में महाराजा अग्रसेन की जयंती पर उनकी कुलदेवी महालक्ष्मी एवं उनके पति महाविष्णु श्री कल्कि नारायण पर आधारित सनातन धर्म एवं हिंदू धर्म पर आधारित विश्व का पहला भूमिगत म्यूजियम देखेंगे। हमारी आत्मा पुकार-पुकार कर कहेगी यह कल्कि जी का म्यूजियम है।



महाराजा अग्रसेन : अग्रवालों की पैतृक भूमि अग्रोहा धाम 27 एकड़ में फैली हुई है जिसे महाराजा अग्रसेन ने बसाया था। महाराजा अग्रसेन के 18 पुत्रों के नाम पर ही अग्रवाल वैश्य समाज में 18 गोत्र मान्य हैं। महाभारत के युद्ध में महाराजा अग्रसेन युधिष्ठिर के पक्ष से लड़े थे। उस समय उनकी आयु मात्र 15 वर्ष थी। अग्रसेन जी के पिता बल्लभसेन भीष्म पितामह के बाणों से बिंध कर वीरगति को प्राप्त हुए थे। धर्मराज युधिष्ठिर ने उनकी दयालुता की प्रशंसा करते हुए कहा था कि मैंने युद्धभूमि में कुमार अग्रसेन में परम पराक्रम के साथ-साथ पूर्ण महाबल एवं धर्मबल से युक्त दयालुता देखी है। इन्होंने पिता के वध के संताप को सहन करते हुए, सैकड़ों घायलों और निशस्त्रों को जीवन दान देकर धर्म की रक्षा की है।

वैश्य वंश शिरोमणि
महाराजा अग्रसेन



युद्ध की विनाशलीला से संतप्त महाराजा अग्रसेन ने अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार न करने में व दान करने में अपनी श्रेष्ठ (कार्य/कर्म) दूसरों की जीविका का प्रबंध करना अपना कर्तव्य समझा। अतः क्षत्रिय धर्म त्याग कर वैश्य धर्म वर्ण को अपनाया। राजा अग्रसेन ने दो ईंट व एक सिक्के के सिद्धांत से (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र) वैश्य समाज (जन्म व कर्म से) को मांसाहारी से शाकाहारी बनाया। इनके राज्य में मांसाहार पूर्ण रूप से निषेध था। जिससे प्रसन्न होकर महालक्ष्मी ने आशीर्वाद दिया कि इनके कुल (अग्रवालों के 18 गोत्रों) पर जो उनकी तरह ही चलेंगे उन पर महालक्ष्मी की सदैव अपार कृपा बनी रहेगी। इसलिए महालक्ष्मी अग्रवालों (वैश्य समाज) की कुल देवी कहलाई। भगवान शंकर ने भी एक हाथ शाकाहारी वैश्य समाज पर और दूसरा हाथ अन्य वर्णों (ब्राह्मण-क्षत्रिय-शूद्र) पर रखा।

महाराजा अग्रसेन के पुरुषार्थ की यह उदार जीविका, प्रबंध नीति, शाकाहारी नीति व गौरव गाथा महर्षि जैमिनी ने धर्मज्ञ जन्मजेय को सुनाई जो समस्त शास्त्रों, पुराणों व वेदों के प्रकांड विद्वान थे। उन्होंने कहा कि हे जन्मजेय, जैसे समुद्र के पास जाने की इच्छा रखने वाले वणिक पुत्र

अग्रवालों की कुल देवी महालक्ष्मी

(व्यापारी/बनिए) को जहाज की आवश्यकता होती है वैसे ही स्वर्ग की कामना वाले के लिए शिष्ट (सभ्य) पुरुषों द्वारा अपनाए गए धर्म का उदार आचरण करना ही जहाज है।

17 जुलाई 2013 को अग्रोहा धाम में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की स्थापना हुई उसी रात वहाँ श्री रोहित गुप्त (09899499848) को स्वप्नानुभव में प्रभु श्री कल्कि ने कहा कि अग्रोहा धाम मेरा अदभुत मंदिर है।

भारतवर्ष की ही नहीं विश्व की जातियों में अग्रवालों का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। इस जाति के बहुसंख्यक व्यक्ति वर्तमान में करोड़ों की संख्या में कृषि-शिक्षा-चिकित्सा-व्यापार-तकनीकी संस्थानों में ख्याति प्राप्त हैं एवं निरंतर अर्जित कर रहे हैं। इसलिए दीपावली को जन्म व कर्म से सभी वैश्य समाज महालक्ष्मी की तन-मन-धन से पूजा करते हैं।

जब 10 जुलाई 2013 को महाविष्णु के अवतार भगवान श्री कल्कि की मूर्ति प्रतिष्ठित होने के लिए अग्रोहा धाम पहुंची तो महालक्ष्मी खुशी से गद्गद् हो गई और उन्होंने चबूतरे पर बैठकर श्री विमल रातुसरिया द्वारा नाखूनों से आटा निकलवाते हुए सुकून महसूस किया अर्थात् वैश्य समाज को पोषण करते-करते अब उनके मालिक महाविष्णु श्री कल्कि रूप में सपरिवार आए हैं तो वह चैन से रह कर सबको अथाह सुख-संपत्ति-स्वास्थ्य व चैन देंगी व दिलवाएंगी। ज्यादा क्या कहें महालक्ष्मी की खुशी दया कल्कि परिवार के प्रत्येक भक्त महसूस कर रहे हैं।

कल्कि जी की कृपा से आप अगली 8 अक्टूबर 2015 तक उदार प्रवृत्ति महाराजा अग्रसेन की जयंती पर विश्व



अग्रोहा धाम में महालक्ष्मी जी ने
कल्कि जी को सपरिवार बुलाया



विश्व का पहला भूमिगत कल्कि म्यूजियम



रखने वाले वणिक पुत्र

(व्यापारी/बनिए) को जहाज की आवश्यकता होती है वैसे ही स्वर्ग की कामना वाले के लिए शिष्ट (सभ्य) पुरुषों

द्वारा अपनाए गए धर्म का उदार आचरण करना ही जहाज है।

17 जुलाई 2013 को अग्रोहा धाम में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की स्थापना हुई उसी रात वहाँ श्री रोहित गुप्त (09899499848) को स्वप्नानुभव

में प्रभु श्री कल्कि ने कहा कि अग्रोहा धाम मेरा अदभुत मंदिर है।

भारतवर्ष की ही नहीं विश्व की जातियों में अग्रवालों का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। इस जाति के बहुसंख्यक व्यक्ति वर्तमान में करोड़ों की संख्या में कृषि-शिक्षा-चिकित्सा-व्यापार-तकनीकी संस्थानों में ख्याति प्राप्त हैं एवं निरंतर अर्जित कर रहे हैं।

इसलिए दीपावली को जन्म व कर्म से सभी वैश्य समाज महालक्ष्मी की तन-मन-धन से पूजा करते हैं।

जब 10 जुलाई 2013 को महाविष्णु के अवतार भगवान श्री कल्कि की मूर्ति प्रतिष्ठित होने के लिए अग्रोहा धाम पहुंची तो महालक्ष्मी खुशी से गद्गद् हो गई और उन्होंने चबूतरे पर बैठकर श्री विमल रातुसरिया द्वारा नाखूनों से आटा निकलवाते हुए सुकून महसूस किया अर्थात् वैश्य समाज को पोषण करते-करते अब उनके मालिक महाविष्णु श्री कल्कि रूप में सपरिवार आए हैं तो वह चैन से रह कर सबको अथाह सुख-संपत्ति-स्वास्थ्य व चैन देंगी व दिलवाएंगी। ज्यादा क्या कहें महालक्ष्मी की खुशी दया कल्कि परिवार के प्रत्येक भक्त महसूस कर रहे हैं।

कल्कि जी की कृपा से आप अगली 8 अक्टूबर 2015 तक उदार प्रवृत्ति महाराजा अग्रसेन की जयंती पर विश्व



जब महालक्ष्मी को नाखूनों से आटा
निकलवा कर सुकून मिला

का पहला कल्कि संग्रहालय जो जमीन के नीचे बना (भूमिगत, अंडरग्राउंड) सनातन धर्म एवं हिंदूत्व पर आधारित है, आपकी अच्छी सोच व विश्वास को दर्शाने वाला हमारी आने वाली पीढ़ियों को ही नहीं विश्व को भी नई राह प्रदान करेगा ।

उदार वैश्य भामाशाह : अकबर के शासनकाल में मुगलों ने एक तरह से पूरे भारत की धरती पर अपना कब्जा जमा लिया था । उस समय एकमात्र महाराणा प्रताप ही थे जिन्होंने अपने कुछ मुठ्ठी भर सैनिकों के साथ अकबर का मुकाबला किया लेकिन एक समय ऐसा आया जब महाराणा प्रताप मुगलों से पराजित हो गए और मुगलों ने राजपूतों के समस्त राज्यों पर अधिकार कर लिया । उस समय महाराणा प्रताप जंगल में रहे और घास की रोटी खाई । उसी समय हिंदुत्व की भावना संजोए मुगलों के अत्याचारों से पीड़ित वैश्य समाज के भामाशाह ने बोरी भर- भर कर धन महाराणा प्रताप को दिया । यह धन इतना था कि एक लाख सैनिक लगातार पाँच वर्षों तक युद्ध लड़ सकते थे । महाराणा प्रताप ने इस धन से सेना इकट्ठी की और अकबर पर चढ़ाई कर दी । उन्होंने चित्तौड़ को छोड़कर संपूर्ण मेवाड़ अकबर से जीत लिया । उस जीत के बाद महाराणा प्रताप ने कहा कि इस जीत का असली हकदार सेठ (हिंदुत्व की उदार भावनाओं को संजोए) वैश्य भामाशाह ही है । जब महाराणा प्रताप ने भामाशाह का अभिनंदन करने के लिए विशाल आयोजन किया और मन में तय किया कि एक बार भामाशाह को राजसिंहासन पर बैठाकर ही स्वयं इस सिंहासन पर बैठूँगा । लेकिन भामाशाह का मृतक शरीर एक ऊँची पहाड़ी के नीचे पाया गया । उनकी जेब में कागज का एक टुकड़ा मिला जिसमें लिखा था कि प्रताप आगे आने वाली पीढ़ियाँ शायद यह सोचेंगी कि भामाशाह ने अपना अभिनंदन एवं इज्जत चाहने के लिए ही यह धन दिया था । यह धन जो मैंने तुम्हें दिया था यह मुझे मेरे राष्ट्र से मिला था, मैंने कोई एहसान नहीं किया, केवल अपने कर्तव्य का पालन किया है । मेरा अभिनंदन उस दिन हो जाएगा जिस दिन तुम चित्तौड़ को जीत लोगे । महाराणा प्रताप की आँखों में आँसू आ गए । उनके मुख से निकला कि जिस देश में ऐसे महान व्यक्तित्व वाले दानी हों क्या वह देश कभी गुलाम रह सकता है ? प्रताप ने चित्तौड़ को मुगलों से मुक्त कराया और मेवाड़ में एक बड़ा भारी स्तंभ बनवाया । उस स्तंभ पर आज भी वैश्य भामाशाह का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा हुआ है । यदि ऐसे विचार हम सभी हिंदुओं के हो जाएं तो हमारा भारत देश दुनिया का सिरमौर बन सकता है ।



भामाशाह जिन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिए राष्ट्र प्रेम का उदाहरण प्रस्तुत किया

आज हम अपनी परंपराओं और अपने गौरव को विस्मृत कर चुके हैं और अंग्रेजियत के गुलाम बन कर अपनी संस्कृति, धर्म, परंपराओं, हमारे देवी देवताओं और हिंदूत्व के गौरव को नीची निगाह से देख रहे हैं और अपनी जड़ों को खोखला कर रहे हैं और करवा रहे हैं ।

कलियुग के अवतार भगवान श्री कल्कि की यह अद्भुत कृपा बरसी है कि स्वयं महालक्ष्मी ने साक्षात् प्रगट होकर हमें इतना उत्तम अवसर प्रदान किया है कि आज हम अग्रोहा धाम में महालक्ष्मी की कृपा से विश्व का पहला सनातन धर्म पर आधारित श्री कल्कि म्यूजियम बनाने जा रहे हैं । इसके लिए आप समस्त अग्रवाल समाज के विशिष्ट सदस्य दो प्रकारसे (अच्छी सोच-अटूट विश्वास) अपना सहयोग दे सकते हैं और भाग्यशाली से महाभाग्यशाली बनने का अवसर प्राप्त कर सकते हैं ।

हनुमान जी की सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि वह त्रेता युग में अवतार की लीला के महत्वपूर्ण सहभागी बने । भक्तजनों भाग्य से आपको भी कलियुग के युगावतार भगवान श्री कल्कि की लीला में सहयोगी होने का सुअवसर मिल रहा है । कल्कि जी का साहित्य पढ़ें इससे कल्कि जी की लीला के रहस्यमयी पदें खुलते चले जाएंगे एवं अग्रोहा धाम में विराति समस्त वैश्य समाज की कुलदेवी महालक्ष्मी की विशेष कृपा आप स्वयं महसूस करेंगे । अग्रोहा धाम में जो कल्कि म्यूजियम महालक्ष्मी एवं महाविष्णु बनवा रहे हैं उसके लिए आपके सुंदर सुझाव सादर आमंत्रित हैं ।



सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

दिनांक : शनिवार 8 नवंबर एवं 13 दिसंबर 2014

स्थान : मामाजी बी-2, बहादुर अपार्टमन्ट, सिविल लाईन्स, नई दिल्ली

समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक

संपर्क : श्री कल्कि बाल वाटिका:- (मामाजी)

बन पड़े तो सही आइ. सी. यू. उपचार एवं अनुभव का अर्थ जानने के लिए अपने अनुभव लिखकर डुप्लीकेट अथवा फोटो कॉपी कराकर लाएं

दिनांक : शनिवार 6 दिसंबर 2014

स्थान : जी-3 थर्ड फ्लोर, मित्रद्वीप अपार्टमेंट पटपड़गंज दिल्ली-92

समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक

संपर्क : श्री सुनील गर्ग, सुश्री संगीता गर्ग

(9873349478)

संचालिका- सुश्री मेघना गोयल (9136377829)

नए समाज में नए माध्यम से कल्कि जी के प्रचार के रास्ते खुले

10 अक्टूबर 2014 को रोहिणी में स्थित फाइव स्टार होटल क्राउन प्लाजा में भगवान श्री कल्कि के साहित्य का स्टॉल श्री कल्कि बाल वाटिका के सदस्यों (अंकुर गोयल, शलभ गोयल, रश्मि गुप्त, संगीता गर्ग, निशी गर्ग, मेघना गोयल) ने लगाया जिसमें प्रातः 10 बजे से शाम 8 बजे तक वहां आने वाले आगंतुकों ने भगवान श्री कल्कि के बारे में जानना चाहा। भगवान श्री कल्कि के पीले पेपर, व प्रसाद प्रत्येक आने वाले को दिया गया। एक टीम के रूप में सभी सदस्यों ने प्लानिंग करके तीन-तीन घंटे तक साहित्य स्टॉल पर अपना समय दिया। सुश्री रश्मि गुप्त ने प्रातः 10 बजे से रात्रि 8 बजे तक लोगों को भगवान श्री कल्कि के बारे में जानकारी दी। शाम को सात बजे श्री कल्कि बाल वाटिका के बच्चों (अक्षिता, उपासना, वाणी, सताक्षी, श्रेया, खुशी, अलिशा, मीमांसा) ने दशावतार नृत्य प्रस्तुत किया।



इस कार्यक्रम से प्रेरित होकर पुनः 14 अक्टूबर 2014 को इसी होटल में आयोजित दिवाली मेले में पुनः कल्कि भगवान का स्टॉल लगाया गया। क्राउन प्लाजा रोहिणी में कल्कि बाल वाटिका के बच्चों की दशावतार प्रस्तुति

यहाँ की आयोजक सुश्री सीमा गुप्त ने भगवान श्री कल्कि के इस स्टॉल का कोई शुल्क कल्कि बाल वाटिका से नहीं लिया। इसके लिए श्री वाटिका के बच्चों की दशावतार प्रस्तुति कल्कि बाल वाटिका उनका साधुवाद करती है। पुनः कल्कि बाल वाटिका के बच्चों की दशावतार प्रस्तुति यहाँ शाम को स्टेज पर हुई जिससे प्रभावित होकर अग्रोहा विकास परिषद की सैक्रेटरी (गायत्री गुप्ता) एवं वाइस प्रेजिडेंट (अलका गुप्त) ने 18 अक्टूबर 2014 को पीतमपुरा में स्थित रिंग रोड मेगा माल में आयोजित होने वाले अग्रवालों के दीवाली मिलन समारोह में कल्कि बाल वाटिका को आमंत्रित किया। दिनांक 18 अक्टूबर को सुश्री निशी गर्ग, संगीता गर्ग एवं मेघना गोयल ने 250 अग्रवाल सदस्यों के समक्ष भगवान श्री कल्कि के बारे में बताकर उन सभी से अपनी नियमित पूजा में भगवान श्री कल्कि के महामंत्र को 21 बार जोड़ कर भगवान की पुकार करने को कहा और भगवान श्री कल्कि की स्वप्नानुभव लीला के बारे में बताया। अग्रोहा विकास परिषद ने यह आग्रह भी किया कि उनके आगामी कार्यक्रमों में भगवान श्री कल्कि की जानकारी लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम वह अवश्य करवाना चाहेंगे।



पहली बार श्री कल्कि बाल वाटिका द्वारा भगवान श्री कल्कि के प्रचार का यह माध्यम अपने आप में अनूठा और सभ्य एवं उच्च समाज को जोड़ने में सहायक सिद्ध होगा। यहाँ हमें नए लोगों एवं नई संस्थाओं से जुड़ने का अवसर मिला जैसे बच्चों की एक संस्था ने श्री कल्कि बाल वाटिका को 14 नवंबर 2014 को पूर्वी दिल्ली में आयोजित होने वाले बच्चों के उत्सव में आने का आमंत्रण दिया जहाँ हम कल्कि जी के बारे में नए बच्चों को खेल-खेल में बताएंगे। आपके सुझाव एवं सहयोग आमंत्रित हैं।

संभल में श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ एवम् श्री कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशाला

30 नवम्बर 2014 को माँ चामुंडा मंदिर हल्लू सराय में

संभल सहस्त्रनाम हवन में जाने हेतु नोएडा तथा पूर्वी दिल्ली के लिए ए.सी. बस की बुकिंग के लिए उत्सव से एक सप्ताह पहले संपर्क करें सुश्री मुक्ता शर्मा (एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट) — 9811134378 बन पड़े तो सीट बुकिंग के रूप में देने का कष्ट करें बस वाले को एडवांस देना पड़ता है। बस जाते और आते समय निश्चित समय पर चलेगी।
शंख माधव तीर्थ— यहाँ शंखमाधव भगवान को शंख के जल से स्नान कराने वाला मनुष्य शंख नाम के निधि का पति बनता है और विष्णु जी के परमपद को प्राप्त होता है।
लोलार्क तीर्थ— धर्म, अर्थ और काम के साधक इस तीर्थ को महर्षियों ने प्रतिष्ठित किया है। यहाँ के निवासियों के योग (अप्राप्त की प्राप्ति) तथा क्षेम (प्राप्त की रक्षा) का भार भी इस तीर्थ पर है। अगहन की सप्तमी में रविवार का योग होने पर यहाँ स्नान, श्राद्ध व तर्पण करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और तर्पण करने वाला अपने माता-पिता के ऋण से मुक्त हो जाता है। माघ की सप्तमी को यहाँ स्नान करने से सात जन्मों के पापों का क्षय होता है एवं दाद-खुजली, फोड़ा, फुंसी का दुख दूर होता है।
सन्निहित तीर्थ— सन्निहित नाम की इस पुष्करणी में जप, तप, स्नान, दान, हवन आदि पुण्य कर्म कोटिगुण फलदायक होते हैं।

ॐ कल्कि सर्वार्थ सिद्धाय नमः ॐ कल्कि पाप मोचनाय नमः ॐ कल्कि पुण्येश्वराय नमः ॐ कल्कि कर्म फलदाय नमः



यमुना तट पर सुप्त तीर्थ जागरण हेतु चलता फिरता श्री कल्कि जयंती महोत्सव

9 नवंबर एवं 7 दिसंबर रविवार 2014 को

9 नवंबर 2014 को असंभव को संभव करने वाला संभल में होने वाला श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ 9 नवंबर एवं 7 दिसंबर 2014 को इन्द्रपस्थ यमुना तट पर यमुना जी के यज्ञ की दो कुण्डीय यज्ञ संकीर्तन, सत्संग प्रातः 5 बजे से 8 बजे तक लघु भंडारे के रूप में होगा।

टी.वी. चैनल कवरेज * यमुना महारानी को मर्दाना व जनाना वस्त्र, सीधा, पानी, धूप, मौली के लिये सम्पर्क करें- श्री राजेश जी-8860666461

स्थान: सागर में नैया डगमग डोले को सहारा देने वाली यमराज की बहन यमुना महारानी के घाट नं० 23 पर

आपके द्वारा किया जाने वाला दो कुण्डीय श्री कल्कि सहस्त्रनाम-बगलामुखी यज्ञ-संकीर्तन-भण्डारे के फल के लिये अपने हिस्से का सहयोग (सामान अथवा नगद रूपया) यमुना तीर्थ-यज्ञ-भण्डारा आयोजन में नीचे लिखे तीन प्रभारियों में से किसी को भी एवं सम्भल गंगा तीर्थ के लिये सुश्री इंदु बंसल, श्री सुनील गुप्त (सुश्री सुषमा गोयल के भाई) अथवा मामाजी को दे सकते हैं। संभल तीर्थ की तरह यमुना तीर्थ महोत्सव में आने जाने पर समय की कोई पाबंदी नहीं है। पहली आरती हवन के बाद एवं दूसरी आरती कीर्तन के बाद होगी।

यमुना तट पर श्री कल्कि सहस्त्रनाम - सत्संग - संकीर्तन प्रभारी
 श्री अशोक-संजू गड़ोदिया- 9312539397 श्री राकेश-सुरभि अग्रवाल-9810654193 कु० अक्षय गड़ोदिया 9910006788 विशिष्ट जानकारी अथवा संतुष्ट न होने पर मामाजी 011-23973383

जब नाली की ईंट चौबारे में लग जाए

अगर मंदिर के बाहर भिखारी को एक बार आप ज्यादा रुपए दे दें जिसके कारण वह आपसे प्रतिदिन ज्यादा निकटता करने लगे तो आप खुले सिक्के एक एक रुपए के ले जाएं वह देने पर वह खुद ही आपसे दूरी बना लेगा।



जब परेशानी में कोई रास्ता न सूझे तो कल्कि जी का कीर्तन करे

श्री हनुमान जी को लंका पहुंच कर कोई रास्ता नहीं सूझा उन्होंने राम नाम कीर्तन शुरू किया तभी उन्हें विभीषण के घर से हरि भजन की ध्वनि सुनाई दी।



कल्कि साहित्य समासि के कगार पर

बन पड़े तो अपने शुभ के रूपों में से सहयोग साहित्य प्रभारियों के पास भेजें
मेघना गोयल-916377829
पूजा गुप्त-9811858723
सुषमा गोयल-9899698240
रेनू बंसल-9818000004
रश्मि गुप्त-9711108050
मामाजी-9136377829



ऑडियो सी.डी.



डी.वी.डी.



यू.एस.बी. | पैन ड्राइव



मंत्र बॉक्स

श्री कल्कि जी का शुभ का खजाना

अपनी आमदनी में से कम से कम एक प्रतिशत अधिक से अधिक दस प्रतिशत रुपया भगवान श्री कल्कि के शुभ के खजाने में डालें।

इस खजाने को कहाँ लगाएं?—श्री कल्कि बाल वाटिका की संस्कार रोपण कार्यशालाओं, श्री कल्कि जी के हवनों, सत्संग, कल्कि जी के उपचारों में, कल्कि जी के महोत्सवों-कीर्तन, अनुभव गोष्ठी, मूर्ति स्थापना, शोभा यात्रा, कल्कि जी के उत्सवों में आने जाने में, कल्कि जी के आगामी बनने वाले संग्रहालयों में एवं कल्कि जी के अन्य प्रचार के कार्यों में लगाएं। साहित्य में कम से कम 25 से 30 प्रतिशत अवश्य लगाएं, इससे आपके घर एवं व्यापार के प्रगति के मार्ग योजनाबद्ध तरीके से खुलते चले जाएंगे।

कल्कि जी का सुरक्षा कवच

आज की परेशानियों से बचने के लिए

इसे काट कर लैमिनेशन कर घर के दरवाजे पर लगाने हेतु

रूका हुआ रूपया/ज्वैलरी/प्लॉट/मकान/दुकान : आपका रूपया यदि कहीं रुक गया है अर्थात् नहीं मिलने की उम्मीद है तो जैसा भगवान ने स्वप्नानुभव में बताया है 1 प्रतिशत 2 प्रतिशत या 5 प्रतिशत के हिसाब से रूपया आने पर कल्कि जी के कार्यों (प्रोजेक्टों) में लगाने का संकल्प लें।

1 प्रतिशत, 2 प्रतिशत एवं 5 प्रतिशत : अगर उम्मीद है कि आपका रूका हुआ रूपया मिल सकता है तो रूकी हुई राशि के 1 प्रतिशत का संकल्प लें, अगर उम्मीद कम है तो 2 प्रतिशत का संकल्प लें, और अगर बिल्कुल उम्मीद नहीं हो तो 5 प्रतिशत का संकल्प लें। जब रूपया आए कल्कि जी का रूपया दे दें।

जैसे जैसे रूपया आता रहे वैसे कल्कि जी का रूपया दे दें। उन्हें उधार पसंद नहीं है। किसी प्रापटी या मुकदमे के लिए आप 5 प्रतिशत का शेयर भगवान का बोल देंगे तो सब रूपया आना शुरू हो जाता है।

शादी में विधवा या रूकावट होने पर कल्कि भगवान के उपचारों से 1 (प्रतिशत) कल्कि जी को देना है जितना रूपया आप शादी में लगा रहे हों।

शर्तें लागू—यह कल्कि जी के मानने व कार्य करने वालों पर लागू हैं जिन्हें स्वप्नानुभव आते हैं

कल्कि जी का भंडारा

मात्र 500 रूपए देकर अपने अथवा अपने परिवार पर आई विपदा के लिए कल्कि विष्णु मंदिर, कुंडे वालान में अपने हाथ से फूल माला चढ़ा कर आरती करके भगवान श्री कल्कि को भोग लगाकर शाम 7 बजे प्रति बुधवार भंडारा बांटे। संपर्क : श्री योगेश गुप्ता (9311033445)

कल्कि जी की अखंड जोत

अपने घर व व्यापार की वैभवता के लिए श्री कल्कि विष्णु मंदिर में अखंड जोत में घी अथवा रूपए सामर्थ्य के अनुसार देने हेतु संपर्क करें : श्री रहल अग्रवाल (9891879718)



श्री कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशालाएं : * चाँदनी चौक * दिल्ली विश्वविद्यालय * नोएडा * पंजाबी बाग * पटपड़गंज * गगन विहार * यमुना विहार * महावीर नगर * ग्रीन पार्क * रोहिणी * सब्जी मंडी, घंटाघर * सम्भल * कोलकाता * असरोही

**श्री कल्कि बाल वाटिका**

के सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें— 9312533445, 9136377829 0911858723

न करने का न करवाने का इंग्लिश बस फोन करते रहें जब तक काम पूरा न हो
मंदिरों में भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति, पोशाक, लाईट प्रभारी :

हर्षित गुप्त (मनु-9999885277), अंकित गड़ौदिया (9968154304)

राहुल अग्रवाल (9891879718), अलका गोयल (9811281271)

आभार : श्री कल्कि पुराण, ऋग वेद

स्वामी राम सुखदास, नवभारत टाइम्स

योगेश प्रकाश गुप्त, दिल्ली द्वारा प्रकाशित

व अन्य बालकों के ज्ञानवर्धन हेतु

प्रिंटेर्स : शिवानी ऑफसेट, ए-36 नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (यूपी.)

पारस प्रिंटिंग प्रेस, पटपड़गंज, नई दिल्ली